कहानी शिक्षण और प्रिंट रिच कक्षा से भाषा शिक्षण में आया बदलाव : सुषमा खाखा

गुरु प्रसाद

सुषमा खाखा

झारखण्ड के गुमला ज़िले के जंगल क्षेत्र में एक विद्यालय है—नव प्राथमिक विद्यालय, सरनाटोली। इस गाँव में 21 घर हैं जिनमें कुड़ुख जनजाति के लोग रहते हैं। गाँव में रोज़गार के बहुत कम साधन हैं, इस वजह से लोगों को अकसर पलायन करना पड़ता है। शिक्षिका सुषमा खाखा सरनाटोली विद्यालय में पढ़ाती हैं। उन्होंने कविता-कहानी शिक्षण और प्रिंट रिच कक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के भाषाई कौशलों के विकास पर अच्छा कार्य किया है। इसका विद्यार्थियों के पढ़ने-लिखने पर सकारात्मक असर पड़ा है। उनके काम और काम करने के तरीक़े को लेकर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी गुरु प्रसाद ने उनसे बातचीत की। प्रस्तुत हैं कुछ अंश :

गुरु प्रसाद : सुषमाजी, अपने और अपने विद्यालय बारे में कुछ बताइए।

सुषमा : सरनाटोली विद्यालय की स्थापना 2003 में हुई थी, तभी से यहाँ बतौर शिक्षिका कार्यरत हूँ। मैं इसी क्षेत्र की रहने वाली हूँ। मेरी पढ़ाई भी गुमला में हुई है। हमारे विद्यालय में पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाई होती है। शुरुआत में, मैं यहाँ एकमात्र शिक्षिका थी। जंगल और दूरी होने के कारण इस गाँव के दो-चार विद्यार्थी ही बग़ल के गाँव में पढ़ने जाते थे। अब हमारे विद्यालय में 28 विद्यार्थी हैं। नए नामांकन लगातार जारी हैं, पिछले साल निजी विद्यालय से 7 विद्यार्थियों ने हमारे विद्यालय में प्रवेश लिया है।

गुरु प्रसाद : आपके शिक्षण कार्य की यात्रा कैसी रही है?

सुषमा : शुरुआत में बहुत ही कम संसाधन में पढ़ाना होता था। अब तो गाँव में लोग कुछ-न-कुछ पढ़े-लिखे हैं। वे घर और गाँव में कुड़ुख और नागपुरी में ही बात करते हैं। मैं अपने कक्षा शिक्षण में विद्यार्थियों द्वारा बोली जाने वाली मातृभाषा का खुलकर उपयोग करती हूँ, लेकिन विद्यार्थियों को हिन्दी का अनुभव विद्यालय में ही मिलता है। पहले, मेरी पूरी कोशिश के बावजूद, कक्षा 4 और 5 के कुछ ही विद्यार्थी होते थे जो हिन्दी में किसी तरह बात कर पाते थे। मैं सन्तुष्ट नहीं हो पा रही थी। अभी आप देख सकते हैं कि सभी कक्षाओं के विद्यार्थी पढ़-लिख पाते हैं। पूर्व प्राथमिक में बच्चे भी सरल शब्दों को पहचान लेते हैं।

गुरु प्रसाद : यह कैसे सम्भव हुआ है, अब ऐसा क्या किया जो पहले नहीं होता था?

सुषमा : पहले मैं पुराने तरीक़े से पढ़ना-लिखना सिखाती थी। जैसे—पहले वर्ण और मात्रा सिखाना, फिर बिना मात्रा के छोटे शब्द पढ़ना-लिखना सिखाना, आदि। मैं पाठ्यपुस्तक की कहानी या कविता को एक बार पढ़ा देती थी, और विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के सवाल-जवाब करा देती थी। मैं समझती थी कि विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना आ जाएगा तो वे भाषा सीख जाएँगे। इसलिए उनके मौखिक भाषा विकास पर ध्यान नहीं देती थी। साथ ही, मेरा ध्यान उन्हीं विद्यार्थियों पर रहता था जो जवाब देते थे। पाठ्यपुस्तक के पाठों को पूरा करना ही मेरे लिए पढ़ाना था।

किन्तु 2023 में 'प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण' विषय पर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सहयोग से एक कार्यशाला आयोजित हुई थी। वहाँ मेरी समझ बनी कि कैसे सभी विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने और बोलने में सक्षम बनाया जा सकता है। यह आइडिया मिला कि विद्यार्थियों की मातृभाषा और कविता व कहानियों को हिन्दी भाषा सीखने का माध्यम बनाना ज़रूरी है, क्योंकि विद्यार्थी कहानी सुनना-सुनाना और कविता गाना पसन्द करते हैं। साथ ही, वे मातृभाषा में अपनापन महसूस करते हैं। बस, मैंने अपने पढ़ाने के तरीक़ों में बदलाव किया।

गुरु प्रसाद : थोड़ा विस्तार से बताइए कहानियों को शिक्षण का आधार कैसे बनाया?

सुषमा : विद्यार्थियों में बोलने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से मैंने कक्षा के अतिरिक्त सुबह की सभा में बोलने के अवसर बनाए। इसके लिए पिछले दिनों पढ़ी कहानी को आधार बनाया। सोचा कि विद्यार्थी क्यों न अपनी घर की भाषा और हिन्दी को मिलाकर कहानी-कविता सुनाएँ, अपनी बातें कहें। उद्देश्य था, उन्हें बोलने के ज़्यादा-से-ज़्यादा मौक़े देना।

एक उदाहरण देकर बताती हूँ। कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक की कहानी 'नटखट बन्दर' और *चंपक* पत्रिका की कहानी 'किसान और तीन बेटे' हैं। यह कहानियाँ विद्यार्थियों ने पढ़ी हैं, और उन

पर चर्चा भी हुई है। अब विद्यार्थियों को सुबह की सभा में भी बोलना होता है। यह निर्धारित होता है कि किस दिन कौन-से विद्यार्थी यह कहानी सुनाएँगे।

विद्यार्थियों से कहानी की घटनाओं, पात्रों, आदि पर चर्चा कराती हूँ। उसके बाद चर्चा या पाठ में आए शब्दों पर काम कराती हूँ। मिसाल के तौर पर, कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तक में 'मैं भी' कहानी है। उसमें 'चूजा' शब्द आया है। 'नटखट बन्दर' में 'नटखट' शब्द है। ऐसे शब्दों को विद्यार्थियों से बोर्ड पर लिखवाती हूँ, या ख़ुद लिख देती हूँ। अब इन शब्दों की पहली ध्वनि से मिलते-जुलते शब्दों को सोचकर बोलने को कहती हूँ। मसलन, चूजा में प्रथम ध्वनि 'चू' है और नटखट में 'न'। विद्यार्थी 'चू' से चूना, चूहा, चूरन, आदि शब्द बोलते हैं। इन शब्दों को बोर्ड पर लिखने का अभ्यास करवाती हूँ। देखा कि विद्यार्थी इसमें रुचि लेने लगे हैं। इन शब्दों को चार्ट पेपर पर लिखकर दीवार पर लगाने लगी हूँ।

गुरु प्रसाद : सुषमाजी, इस प्रक्रिया को क्या कोई योजना बनाकर करती हैं?

सुषमा : जी, पहला चरण होता है—कहानी के चित्रों, पात्रों, घटनाओं, आदि पर चर्चा करना; चित्रों, शीर्षक तथा कहानी की घटनाओं पर सवालों (जैसे—बन्दर पेड़ से कूदकर कहाँ जाएगा) के ज़रिए अनुमान लगवाना; कहानी पढ़कर सुनाना; आदि। फिर विद्यार्थियों को अपने अनुभव या सुनी अथवा पढ़ी कहानी को सुबह की सभा में सुनाने को कहती हूँ।

दूसरे चरण में कहानी को एक या दो बार हाव-भाव के साथ पढ़कर सुनाती हूँ। विद्यार्थी मेरे साथ अपनी-अपनी पाठ्यपुस्तक की कहानी की पंक्तियों पर उँगली रखकर पढ़ते जाते हैं। इस काम में वे एक दूसरे की मदद करते हैं। जब वे अपरिचित या कठिन शब्दों को नहीं समझ पाते हैं तब उन्हें उदाहरण के साथ अर्थ समझाती हूँ। उनसे कहानी का सार पूछती हूँ। साथ में मनपसन्द पात्रों के चित्र बनाने का काम होता है।

तीसरे चरण में कहानी में आए नए शब्दों पर काम कराती हूँ। उन्हें बोर्ड पर लिखती हूँ। विद्यार्थियों से बोलती हूँ कि ये शब्द पाठ में कहाँ-कहाँ हैं, खोजो। कभी-कभी पुस्तकों और दीवार पर लिखे शब्दों में भी समान ध्वनि वाले शब्दों को ढूँढ़वाती हूँ। जैसे—बालू भालू आलू / लकड़ी मकड़ी ककड़ी, आदि। इस खेल में वे ख़ूब मज़ा लेते हैं। विद्यार्थियों के साथ मिलकर कई कहानियों के पोस्टर भी बनाए हैं।

गुरु प्रसाद : मगर बिना वर्ण-मात्रा सिखाए विद्यार्थी पढ़ना कैसे सीख जाते हैं?

सुषमा : चर्चा से उभरी बात तो वाक्य में ही होती है। जब वाक्य का अर्थ एक स्तर पर समझने लगते हैं तब वाक्य से मुश्किल अर्थ वाले शब्द छाँटती हूँ, और उन पर काम कराती हूँ। इस तरह मैं वर्णों को जोड़-जोड़कर सिखाने की जगह सीधे शब्दों को सिखाती हूँ। शब्दों में आई ध्वनि को अलग कराती हूँ; जैसे—चर्चा में आए 'नदी' शब्द से न और दी अलग कराती हूँ। फिर न से और दी से नए शब्द बनवाती हूँ। विद्यार्थी कुछ इस तरह से शब्द बनाते हैं—न से ननकु, नकुल और दी से दीदी, दीवार, आदि। इस तरह वे धीरे-धीरे मात्राओं को सीख जाते हैं। वर्णों और मात्राओं को जोड़-जोड़कर पढ़ने के बजाय शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों को समग्र से रूप से पढ़ने को कहती हूँ। कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थी कुछ शब्दों को अर्थ के अनुमान से भी पहचान लेते हैं। मैं शब्दों को कहानी और उस पर हुई चर्चा से ही लेती हूँ। वे शब्द विद्यार्थियों के लिए अनजान नहीं होते हैं।

जब विद्यार्थी बहुत सारे शब्द समझकर पढ़ने लगते हैं, वे दो से तीन सरल शब्दों वाले वाक्य भी पढ़ने लगते हैं। पहली कक्षा में एक पाठ है—'तीन साथी'। यह कहानी हाथी, बकरी और चिड़िया के आपसी सहयोग पर आधारित है। इसका पहला वाक्य है—"एक था हाथी"। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को 'हाथी' शब्द सिखाना है, मगर वे बोल और पढ़ तो रहे हैं पूरा वाक्य। इस तरह से वे अर्थ के अनुमान से वाक्य को बोलना और पढ़ना

चित्र 1 : कक्षा के प्रिंट रिच वातावरण में ख़ुशी से सीखते, बातें करते बच्चे

सीखते हैं। आगे चलकर वे वाक्य के सभी शब्द पहचानने और पढ़ने-लिखने लगते हैं।

गुरु प्रसाद : आप पाठ्यपुस्तक के पाठों में दी गई कहानियों के अलावा कहानियों को कैसे चुनती हैं?

सुषमा : विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप कहानियों का चुनाव करती हूँ। कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों के लिए अधिक चित्र और कम टेक्स्ट या शब्दों व वाक्यों के दोहराव वाली कहानियों का चुनाव करती हूँ। जैसे–'चूहे को मिली पेंसिल', 'प्यासी मैना', 'रूपा हाथी', आदि। कक्षा 3 और 4 के लिए 'चिटकू', 'सप्पू के दोस्त', आदि जैसी थोड़ी बड़ी कहानियाँ चुनती हूँ।

गुरु प्रसाद : सुषमाजी, कुछ लोग कहते हैं कि पाठ्यपुस्तक के पाठों को ही पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता है तो आप ऐसा कैसे कर पाती हैं?

सुषमा : पहले मैं भी ऐसा ही सोचती थी, मगर अब नहीं। विद्यार्थियों को भाषा सीखने के जितने ज़्यादा मौक़े और पठन सामग्री मिलेगी, वे उतनी ही अच्छी तरह से सीखते हैं। रोज़ाना दिन में 2 से 3 बजे तक कहानी पढ़ने का समय निर्धारित है। पढ़ी-सुनी कहानियों को नाटक के रूप में ढालकर उनका मंचन भी कराती हूँ। 'ऊँट और सियार', 'नटखट बन्दर' तथा 'चटपट और पेंसिल' कहानी पर विद्यार्थियों ने ख़ुशी-ख़ुशी नाटक किया था। इसके पीछे उद्देश्य है कि विद्यार्थी कहानी से संवाद बनाना सीखें। संवाद में कई तरह के वाक्य बनाने और बोलने होते हैं। मंच पर सबके सामने पात्रों के अनुरूप अभिनय करना भी उनके अभिव्यक्ति कौशल के लिए उपयुक्त है। और ये सारे भाषाई कौशल पाठ्यपुस्तकों के साथ विद्यार्थियों को आसानी से जोड़ते हैं, इसीलिए पाठ्यपुस्तकों के लिए समय की कोई कमी मुझे महसूस नहीं होती। बस, ठीक तरह से रणनीति बनाने की ज़रूरत होती है।

गुरु प्रसाद : यह कैसे जान पाती हैं कि किस विद्यार्थी को क्या-क्या सीखने की ज़रूरत है?

सुषमा : कक्षा 1 से 4 में कक्षावार विद्यार्थियों की संख्या अधिकतम 7 से 8 ही रहती है। इसलिए एक-एक विद्यार्थी की स्थिति पता रहती है। जब उनसे बातचीत हो रही होती है तब देखती हूँ कि कौन-कौन विद्यार्थी चर्चा में भाग ले रहा है; किस तरह के शब्द और वाक्य बोल रहा है; कैसे बोल रहा है; क्या हिन्दी में बोल पा रहा है; बोलने में प्रवाह है या नहीं; इत्यादि। जब पढ़ने का अभ्यास कराती हूँ तब कौन प्रवाह से; कौन रुक-रुककर पढ़ता है; कौन पढ़कर समझ पा रहा है; किसको अभी मात्राओं की दिक़्क़त हो रही है; आदि। इसी तरह शब्द, वाक्य लिखते समय पता चल जाता है कि कौन लिखने के किस स्तर पर है। ये अवलोकन सीखने के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। विशेषकर आगे पढ़ाने के तरीक़े, शिक्षण में उपयोग किए जा रहे टीएलएम या चर्चा के विषय के बारे में फ़ीडबैक मिल जाता है कि वह कितना उपयोगी रहा है; क्या सुधार करना है; आदि।

मैं यह तो नहीं कहती हूँ कि हमारे विद्यालय के सभी विद्यार्थी धाराप्रवाह पढ़ना-लिखना सीख गए हैं, लेकिन इतना ज़रूर कह सकती हूँ कि ज़्यादातर विद्यार्थी स्तर अनुसार शब्द, वाक्य और अनुच्छेद पढ़-लिख पा रहे हैं, और सबके सामने बोल पा रहे हैं।

गुरु प्रसाद : यह जो कक्षा में प्रिंट दिख रहा है, उसे आपने कैसे तैयार किया है; उसका क्या उपयोग है?

सुषमा : ये सभी पढ़ाने के समय ही बनते हैं। यहाँ छोटे-छोटे पेज पर भी विद्यार्थियों की हैंडराइटिंग में कहानी और कविताएँ लगी हुई हैं। हमारे सहयोग से यह सब विद्यार्थी स्वयं करते हैं। वे इन लिखी-छपी रचनाओं को पढ़ते हैं तब उन्हें अच्छा लगता है। वे एक दूसरे को पढ़ने में मदद करते हैं। हम लोग भी पढ़ने के अभ्यास के रूप में इस प्रिंट का उपयोग करते हैं।

गुरु प्रसाद : काम में कुछ चुनौतियाँ भी आती होंगी, उनका समाधान कैसे करती हैं?

सुषमा : पहली चुनौती तो यह कि कभी-कभी विद्यार्थी अनुपस्थित हो जाते हैं, इससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। हम ऐसे विद्यार्थियों के घर जाते हैं, या अभिभावकों से सम्पर्क करते हैं। मगर खेती-बाड़ी, शादी-ब्याह या पर्व-त्योहार के समय उन्हें विद्यालय लाना मुश्किल हो जाता है।

चूँकि मैं प्रभारी प्रधानाध्यापिका हूँ, इसलिए दूसरी चुनौती है पढ़ाई के साथ समय पर कई विभागीय कार्य पूरे करना। ज़रूरत पड़ने पर पुस्तकालय, शिक्षण सामग्री व विद्यार्थियों के सहयोग से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया जारी रखती हूँ। मेरे सहयोगी शिक्षक भी शिक्षण की प्रक्रिया में मदद करते रहते हैं। तीसरी चुनौती भवन को मरम्मत की आवश्यकता है। छत से पानी टपकता है। विद्यार्थियों को बैठाने की समस्या आ जाती है। पढ़ाई-लिखाई भी बाधित हो जाती है। गाँव के लोग ग़रीब हैं, वे सहयोग नहीं कर पाते, बस सरकारी मदद की आस रहती है।

गुरु प्रसाद : पढ़ाने के इन तरीक़ों से आपकी क्या समझ बनी?

सुषमा : मैंने बहुत कुछ सीखा है, और सीख रही हूँ। मातृभाषा, कहानी और कविता की मदद से हिन्दी भाषा शिक्षण करने से विद्यार्थी न सिर्फ़ बेहतर ढंग से सीखते हैं, बल्कि हम शिक्षकों को भी फ़ायदा हो रहा है।

गुरु प्रसाद 30 वर्षों से विद्यालयी शिक्षा से सम्बन्धित कार्यक्रमों से जुड़कर पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण और शिक्षकों-प्रशिक्षकों के क्षमता विकास के लिए कार्य करते रहे हैं। 13 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हैं। वर्तमान में राँची, झारखण्ड में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : guru.sharma@azimpremjifoundation.org